अपार जन समूह मौन होकर अपने दिवंगत नेताको श्रद्धांजलि दे रहा था। कहीं कहीं अर्थी रोक ली जाती थी और लोग माला फूल चढाकर अपने नेताको अन्तिम विदाई दे रहे थे। इस अवसरपर राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन एवं अशोक सेनने भी शव यात्रामें भाग लिया। डाक्टर रायके अन्तिम दर्शनके हेतु असेम्बली भवनका प्रांगण खचाखच भीड़से भर गया था। लोग शांतिपूर्वक अन्तिम दर्शनके लिए जा रहे थे। शव कल सायंकालको ही विधान सभा भवनमें ले जाया गया था।

...र बर्द्धर ...
...ायंकाल ...
...शव निवास

डाक्टर राय अभी तक अविवाहित थे। संयोगकी बात तो यह है कि कल ही आपकी ८१ वीं वर्षगांठ थी। आपके चिरजीवनकी मंगल कामनाके लिए लोगोंने ८१ वीं जन्म तिथि समारोह मनानेका निश्चय किया था। एतदर्थ होनेवाले समारोहमें राष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन भी भाग लेनेवाले थे परन्तु सब कुछ व्यर्थ हो गया।

सहसा आपकी मृत्युका समाचार सुनकर समारोहके सारे कार्यक्रम रद्द कर दिये गये। संस्थाएं एवं बाजार बन्द होने लगे। झंडे भी झुका दिये गये। पश्चिमी बंगाल सरकारने सप्ताह भर तक शोक मनानेका निश्चय किया है।

मृत्युका समाचार सुनकर अन्य नगरों तथा भारतकी राजधानी दिल्लीमें भी झंडे झुका दिये गये।

के मुख्यमन्त्री श्रीचन्द्रभानु गुप्तने टण्डनजीके निधनपर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा है कि उनके निधनसे उत्तरप्रदेशने एक दृढ़ व्रती नेताको खो दिया है जिसकी निकट भविष्यमें पूर्ति सम्भव नहीं है।

मुख्यमन्त्री श्रीगुप्त टण्डनजीके निधनका समाचार मिलते ही आगरा के अपने सभी कार्यक्रम रद्द कर लखनऊ वापस चले आये।

श्रीगुप्तने कहा कि टण्डनजीके निधनसे हमारे बीचसे एक ऐसा दृढ़वती नेता उठ गया जो जीवनभर कुछ निश्चित सिद्धांतोंको लेकर लड़ता रहा ब्रिटिशकालमें वह गांधीजीके नेतृत्वमें देशकी स्वतन्त्रताके लिए लड़े। टंडनजीका जीवन सार्वजनिक कार्यकर्ताओंके लिए प्रेरणादायक रहेगा।

...डेग्री कोर्स एवं पत्र–

आज सभी सरकारी
कार्यालय बन्द

...प्राप्त होनेके का...
...हत्या कर ली है...
...चिट्ठी मिली...
...सामने आया है...

परी...

केन्द्रीय सुगम...

नयी दिल्ली... संगीत के लिये... स्थापित किया... के दिल्ली मह... करा केन्द्रों में... समितियां होंगी... चैत्रों की भाषा... के कलाकारों... होगा।

अब तक ... के कलाकारों ... ही केन्द्रीय स्वर ... जिस ने दी ... समितियां हैं।

और आशा है कि ये सभी केंद्र इस बर्ष के अंत तक काम करना शुरु कर देंगे।

कांगों में रेड-क्रास का उत्सव

लियोपोल्डविले, २ जुलाई। कल शाम यहां रेड क्रास उत्सव का उद्घाटन करते हुए ओ. एन. यू. पी. के कार्याधिकारी डा० आर. के. ए. गार्डिनर ने कल्याण कार्यों को महत्वपूर्ण बताया। आपने कहा कि ओ. एन. यू. सी. के रास्ते में आने वाली कठिनाइयों और विफलताओं के बावजूद हमें इस बात को नहीं भूल जाना चाहिए कि हम सेना और कांगों की जनता की सेवा कर रहे हैं। डा० गार्डिनर को यह देख कर खुशी हुई कि यह अंतराष्ट्रिय

अधिक जन समूहने इस महान देशभक्तको श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रयागके कल्याणी देवी स्थित उनके निवास स्थानसे सायंकाल ६ बजे शव यात्रा आरम्भ हुई जिसमें २ लाखसे भी अधिक व्यक्ति शामिल हुए। तिरंगी ध्वजासे सजे हुए रथ पर आपका शव रखा गया।

शव यात्रामें नागरिकोंके अतिरिक्त गृह मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी, उत्तर प्रदेशके गवर्नर श्री विश्वनाथ दास, मुख्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त, वित्त मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी, शिक्षा मंत्री आचार्य जुगुलकिशोर, राजस्व मंत्री ठाकुर हुकुम सिंह,

संस्थाओंकी ओरसे शवको मालाएं अर्पितकी गयीं।

अफगाननिस्तानसे माल का आयात

नयी दिल्ली २ जुलाई। अगस्त १९६२ के अन्त तक ईरान के बन्दरगाहों से स्टीमरों से अफगानिस्तान से सूखी फल, हींग, जीरा और जड़ी बुटी आयात करने की अनुमति देने का निर्णय हुआ है। माल मगानेवाले को इन चीजों के मूल्य और किराये के बराबर मूल्य का समान अफगानिस्तान निर्यात करना होगा। माल मंगाने और भेजने की सीमा निर्धारित होगी।

बंगालका युग पुरुष उठ गया

श्रीः

पाण्डवगीता।

(पाण्डवादिकृतं भगवन्नाममाहात्म्यम्)

प्रतापगढ़ [अवध] प्रान्तान्तर्गत श्रीनाथपुर
ग्राम निवासी सर्वजीत सिंहात्मज
अमरपालसिंह विशारद कृत
भाषाटीका सहिता।

सेयं

भार्गवपुस्तकालयाध्यक्षेण
बाबू काशीप्रसाद भार्गवेण
स्वकीये
"भार्गवभूषण" नाम्नियन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशिता।

१९८४

॥ श्रीः ॥

पाण्डवगीता ।

प्रतापगढ़ [अवध] प्रान्तान्तर्गत श्रीनाथपुर ग्राम निवासी, सर्वजीतसिंहात्मज अमरपाल सिंह विशारद कृत भाषाटीका सहिता ।

सेयं

भार्गवपुस्तकालयाध्यक्षेण
बाबू काशीप्रसाद भार्गवेण

काश्यां
'स्वकीये' भार्गवभूषण नाम्नियन्त्रालये
मुद्रयित्वाप्रकाशिता ।

प्रथमावृत्तिः ।

१९८४

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

पाण्डवगीता ।

भाषाटीकासमेता ।

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीकव्यासा
म्बरीषशुकशौनकभीष्मकाद्याः ॥
रुक्माङ्गदार्जुनवसिष्ठविभीषणाद्या
एतानहं परमभागवतान्नमामि ॥१॥

कन्दर्पसुन्दराकारं वृन्दावनविभूषणम् ॥
आनन्दकन्दमानन्दनन्दनं वन्दिषीमहि ॥ १ ॥

प्रह्लाद, नारद, पराशर, पुण्डरीक, व्यास, अम्बरीष, शुक, शौनक भीष्मदेव, रुक्माङ्गद, अर्जुन, वसिष्ठ, और विभीषण इत्यादि भगवत्स्वरूप भगवान के परम भक्तों को मैं प्रणाम करता हूँ. भक्तों के लक्षण—(सर्वभूतेषु यः पश्ये द्भगवद्भावमात्मनः) जो स्थावर जंगमादि समस्त चराचर में भगवान को देखे वही परम भक्त है ॥ १ ॥

लोमहर्षण उवाच ॥ धर्मो विवर्द्धति युधिष्ठिरकीर्त्तनेन पापं प्रणश्यति वृकोदरकीर्त्तनेन ॥ शत्रुर्विनश्यति धनञ्जयकीर्त्तनेन माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः ॥ २॥

लोमहर्षण ने पाण्डवों की स्तुति पूर्वक कहा—कि युधिष्ठिर का नाम लेने से धर्म की वृद्धि होतीहै, भीम का नाम लेने से अनेक पाप नाश होते हैं, धनञ्जय (अर्जुन) का नाम लेने से शत्रुओं का नाश होता है, और माद्री के दोनों लड़कों (अर्थात् नकुल और सहदेव) के नाम को स्मरण करने से रोग नष्ट होता है धर्म के लक्षण—स्वर्ग यजनादि प्रवृत्ति धर्म भक्त्युपासनादि निवृत्ति धर्म, अर्थात् यज्ञादि कर्मों से स्वर्गादि सुख की इच्छा करने को प्रवृत्ति धर्म और भक्ति तथा उपासना आदि से ईश्वर प्राप्ति को निवृत्ति धर्म कहते हैं ॥ २ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ ये मानवा विगतरागपराऽपरज्ञा नारायणं सुरगुरुं सततं

स्मरन्ति ॥ ध्यानेन तेन हतकिल्बिषचेतनास्तेमातुःपयोधररसं न पुनः पिबान्ति॥ ३ ॥

ब्रह्मा जीने कहा — जो मनुष्य राग और द्वेष को छोड़ कर सब देवों में श्रेष्ठ नारायण का सदैव स्मरण करते हैं, उनके केवल ध्यान से ही सब पाप नष्ट हो जाते हैं .और फिर वे माता के स्तन का दूध नहीं पीते हैं (अर्थात् फिर वह जन्म नहीं पाते हैं — अर्थात् मुक्त हो जाते हैं) ध्यान के लक्षण (उत्कण्ठा पूर्वकं ध्यानं भक्ति रित्यभिधीयते) अर्थात् उत्कण्ठा पूर्वक भगवान् का जो ध्यान है उसी को भक्ति कहते हैं ॥ ३ ॥

इन्द्र उवाच॥ नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्धचौरः कथितः पृथिव्याम् ॥ अनेकजन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषं स्मृत मात्र एव यः॥४॥

इन्द्र ने कहा — नारायण का नाम पृथ्वी में सब चोरों से प्रबल चोर बतलाया गया है क्योंकि वह अनेक जन्मों

के इकट्ठा किये हुये पापसमूह को केवल स्मरण मात्र से ही हर लेता है (अनेक जन्मार्जित पाप चौरम्, चौराग्रगण्यम् पुरुषं नमामि) ॥ ४ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ मेघश्यामं पीत कौशेयवस्त्रंश्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भा सिताङ्गम् ॥ पुण्योपेतं पुण्डरीकाय ताक्षंविष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनांथम्

युधिष्ठिर ने कहा — काले मेघ के समान श्याम शरीर वाले, पीले रेशमी वस्त्र को धारण करने वाले, भृगुलत्ता और कौस्तुभ मणि से प्रकाशित अंग वाले, पुण्य युक्त, उज्वल कमल के समान नेत्र वाले, सब लोकों के एक ही नाथ (स्वामी) विष्णु भगवान को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

भीमसेन उवाच॥जलौघमग्ना सच राऽचरां धरां विषाणकोट्याऽखिल विश्वमूर्तिना ॥समुद्धृता येन वराह

रूपिणा स मेऽस्वयम्भूर्भगवान् प्रसीदतु ॥ ६ ॥

भीमसेन ने कहा — जल समूह में डूबी हुई, जड़ और चेतन सहित, पृथ्वी को जिस अखिल विश्व मूर्ति (समस्त संसार स्वरूप) ईश्वर ने (वाराह अवतार लेकर) अपनी डाढ़ से निकाला है वही स्वयंभू भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न हों ॥ ६ ॥

अर्जुन उवाच ॥ अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययं विभुं प्रभुं भावितविश्वभावनम्। त्रैलोक्यविस्तारविचारकारकं हरिं प्रपन्नोऽस्मि गतिं महात्मनाम् ॥७॥

अर्जुन बोले — अचिन्त्य (जो ध्यान में न आवे), अव्यक्त (जो दिखाई न पडे), अनंत,(जो जरा मरण से रहित) अव्यय (अविनाशी), विभु, व्यापक और समस्त विश्व को पालन करने वाले, और तीनों लोक के विस्तार के विचारक, तथा महात्माओं की गति, ऐसे हरि की मैं

शरण में हूँ शरणागत — (विदितः सर्व धर्मज्ञः शरणागत वत्सलः) अर्थात् यह प्रसिद्ध है कि भगवान् अपने शरण आये हुए के दोषों को भी गुणमान कर उसका आदर करते हैं ॥ ७ ॥

नकुल उवाच ॥ यदि गमनमधस्तात् कालपाशानुबन्धाद्यदि च कुलविहीने जायते पक्षिकीटे ॥ कृमिशतमपि गत्वा ध्यायते चान्तरात्मा मम भवतु हृदिस्था केशवे भक्तिरेका ॥८॥

नकुल ने कहा — चाहे कालपाश में बँध कर नर्क को जाऊँ, चाहे कुल विहीन पक्षी और कीटों की योनि में जन्म पाऊँ, और चाहे सैकड़ों कीड़ों में भी गमन करूँ, परन्तु मैं अन्तरात्मा का ध्यान कर यही चाहता हूँ कि केशव (भगवान) की भक्ति मेरे हृदय में स्थित रहे ॥ ८ ॥

सहदेव उवाच ॥ तस्य यज्ञवराहस्य विष्णोरतुलतेजसः ॥ प्रणामं ये प्रकुर्वन्ति तेषामपि नमो नमः ॥ ९ ॥

सहदेव ने कहा—जो यज्ञ वाराह रूप धारी, अत्यन्त तेजस्वी विष्णु भगवान को प्रणाम करते हैं मैं उनको भी बारम्बार प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

कुन्त्युवाच ॥ स्वकर्मफलनिर्दिष्टां यां यां योनिं व्रजाम्यहम् ॥ तस्यां तस्यांहृषीकेश त्वयि भक्तिर्दृढास्तु मे॥ १० ॥

कुन्ती ने कहा—हे हृषीकेश ! मैं अपने कर्मों के फलानुसार जिस जिस योनि में जाऊँ, उन उन योनियों में आप के लिये मेरे हृदय में दृढ़ भक्ति बनी रहे ॥ १० ॥

माद्र्यु वाच॥ कृष्णे रताःकृष्णमनु स्मरन्ति रात्रौच कृष्णं पुनरुत्थिता ये ॥ ते भिन्नदेहाःप्रविशन्ति कृष्णे हविर्यथा मंत्रहुतं हुताशे॥११॥

माद्री ने कहा—जो कृष्ण ही में रत हैं और रातदिन कृष्ण का ही स्मरण करते हैं वह शरीर छूटने पर कृष्ण

जी में इस प्रकार प्रवेश करते हैं जैसे मंत्र से होमी हुई हवि अग्नि में।' ११ ॥

द्रौपद्युवाच ॥ कीटेषु पक्षिषु मृगेषु सरीसृपेषु रक्षःपिशाचमनुजेष्वपि यत्र तत्र ॥ जातस्य मे भवतु केशव त्वत्प्रसादात्त्वय्येव भक्तिरचलाऽव्यभिचारिणी च ॥ १२ ॥

द्रौपदी बोली—हे केशव! कीट, पक्षी, मृग, सर्प, राक्षस, पिशाच, तथा मनुष्य योनि में अथवा जहां कहीं भी मैं जन्म लूँ, आपके प्रसाद से आप में मेरी निष्कपट और अचल भक्ति बनी रहे ॥ १२ ॥

सुभद्रोवाच॥एकोऽपि कृष्णस्यकृत प्रणामो दशाश्वमेधाऽवभृथेन तुल्यः॥दशाश्वमेधीऽपुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय॥ १३ ॥

सुभद्रा ने कहा – कृष्ण को एक बार भी प्रणाम करना दश अश्वमेधों के बराबर है, परन्तु दश अश्वमेधका करने वाला फिर जन्म पाता है परन्तु कृष्ण को प्रणामकरनेवाला फिर संसार में नहीं जन्म लेता ॥ १३ ॥

अभिमन्युरुवाच। गोविन्दगोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण ॥ गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे गोविन्द गोविन्द नमामि नित्यम् ॥१४॥

अभिमन्यु ने कहा – हे गोविंद, हे गोविंद, हे हरि, हे मुरारी, हे गोविंद, हे गोविंद, हे मुकुन्द हे कृष्ण, हे गोविंद, हे गोविंद, हे चक्रपाणि, हे गोविंद, हे गोविंद मैं आपको नित्य प्रणाम करता हूँ ॥ १४ ॥

धृष्टद्युम्न उवाच। श्रीरामनारायण वासुदेव गोविन्द वैकुण्ठ मुकुन्द कृष्ण ॥ श्रीकेशवाऽनन्त नृसिंह

विष्णो मां त्राहि संसारभुजङ्गदष्टम् ।

धृष्टद्युम्नने कहा—हे श्रीराम, नारायण, वासुदेव, गोविंद, वैकुंठ, मुकुन्द, कृष्ण, केशव, अनंत, नृसिंह, विष्णु, संसार रूपी सर्प से डसे हुये मुझको बचाओ ॥ १५ ॥

सात्यकिरुवाच ॥ अप्रमेय हरे विष्णो कृष्ण दामोदराऽच्युत ॥ गोविन्दाऽनन्त सर्वेश वासुदेवनमोऽस्तु ते ॥१६॥

सात्यकि ने कहा—हे अप्रमेय, हरि, विष्णु, कृष्ण, दामोदर, अच्युत, गोविन्द, अनन्त, सर्वेश, वासुदेव मैं तुम को प्रणाम करता हूँ ॥ १३ ॥

उद्धव उवाच ॥ वासुदेवं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते ॥ तृषितो जान्हवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः ॥१७॥

उद्धव जीने कहा—जो भगवान् वासुदेव को छोड़कर किसी अन्य देवता की उपासना करता है वह मूर्ख मानो

गंगाजी के किनारे प्यासा बैठा हुआ अपनी प्यास बुझाने को कुआँ खोद रहा है ॥ १७ ॥

धौम्य उवाच ॥ अपां समीपे शयनासनस्थिते दिवा च रात्रौ च यथाधिगच्छता ॥ यद्यस्ति किञ्चित् सुकृतं कृतं मया जनार्दनस्तेन कृतेन तुष्यतु ॥ १८ ॥

धौम्य ऋषिने कहा — यदि मैंने जल के निकट, सोते समय, बैठे हुये, दिनमें अथवा रात्रि में कभी कुछ लेश मात्र भी पुण्य क्रिया हो तो हे जनार्दन ! आप उससे सन्तुष्ट हों ॥ १८ ॥

संजय उवाच ॥ आर्त्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीता घोरेषु व्याघ्रादिषु वर्त्तमानाः ॥ सङ्कीर्त्य नारायण शब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥ १९ ॥

सञ्जय ने कहा—जो मनुष्य आर्त हैं, दुखी हैं, तथा शिथिल और डरे हुये हैं अथवा घोर सिंहादि जीवों के बीच में पड़े हैं वे केवल नारायण शब्द का संकीर्तन करने से सब दुःखों से छूट जाते हैं और सुखी होते हैं ॥१९॥

अक्रूर उवाच॥अहमस्मि नारायण दासदासो दासस्य दासस्य च दासदासः॥ अन्यो न ईशो जगतो नराणां तस्मादहं धन्यतरोऽस्मि लोके॥ २० ॥

अक्रूरने कहा—मैं नारायण के दासों के दासों का दास और उसदास के दासों का दास हूं। संसारमें मनुष्यों का और कोई ईश्वर नहीं है इसलिये मैं लोक मेंधन्यहूँ॥२०॥

विराट उवाच ॥ वासुदेवस्य ये भक्ताः शान्तास्तद्गतचेतसः॥तेषां दासस्य दासोऽहं भवेयं जन्मजन्मनि ॥२१॥

विराट ने कहा — जो भगवद्भक्त अपने चित्तको वासुदेव जी ही में लगाते हैं तथा शांत चित्त हैं मैं जन्म जन्मांतर में उनके दासों का दास होऊँ ॥ २१ ॥

भीष्म उवाच ॥ विपरीतेषु कालेषु परिक्षीणेषु बन्धुषु ॥ त्राहि मां कृपया कृष्ण शरणागतवत्सल॥२२॥

भीष्मदेव ने कहा — काल के विपरीत होने पर (अर्थात् आपत्ति में) तथा बंधुओं के क्षीण हो जाने पर हे शरण में आये हुवों को प्यार करने वाले कृष्ण ! आप मेरी रक्षा करें ॥ २२ ॥

द्रोणाचार्य उवाच ॥ ये ये हताश्च क्रधरेण दैत्यास्त्रैलोक्यनाथेन जनार्दनेन। ते ते गता विष्णुपुरी नरेन्द्र क्रोधोऽपि देवस्य वरेण तुल्यः॥२३॥

द्रोणाचार्य ने कहा — हे राजन् ! जिन जिन दैत्यों को चक्र धारण करने वाले, तीनों लोकोंके स्वामी जनार्दन

ने मारा है वे सब विष्णु पुरी को गये हैं (अतएव) देव का क्रोध भी वरदान के समान ही है ॥ २३ ॥

कृपाचार्य उवाच ॥ मज्जन्मनः फल मिदं मधुकैटभारे मत्प्रार्थनीयमद नुग्रह एष एव॥ त्वद्भृत्यभृत्य परि चारकभृत्य भृत्य भृत्यस्य भृत्य इति मां स्मर लोकनाथ ॥२४॥

कृपाचार्य ने कहा—हे लोक नाथ! हे मधु कैटभारि! मेरे जन्म का यही फल है और मेरी प्राथनीय अनुग्रह भी यही है कि आप मुझे अपने दासों के दासों के सेवक तथा उनके दासों के दासों के दास समझ कर मेरा स्मरण करें ॥ २४ ॥

अश्वत्थामोवाच ॥ गोविन्द केशव जनार्दन वासुदेव विश्वेश विश्व मधुसूदन विश्वरूप॥ श्रीपद्मनाभ

पुरुषोत्तम देहि दास्यं नारायणाऽच्युत नृसिंहनमोनमस्ते ॥ २५ ॥

अश्वत्थामा ने कहा—हे गोविन्द ! हे केशव ! हे जनार्दन ! हे विश्वेश, हे विश्व ! हे मधु सूदन ! हे विश्व रूप ! हे पद्मनाभ ! हे पुरुषोत्तम ! आप मुझेअपनी दासता दें और हे नारायण ! हे अच्युत ! आपको बारबार मैं प्रणाम करता हूं ॥ २५ ॥

कर्ण उवाच॥ नान्यं वदामि न शृणोमि न चिन्तयामि नान्यं स्मरामि न भजामि न चाश्रयामि ॥ भक्त्या त्वदीयचरणांबुजमादरेण श्री श्रीनिवास पुरुषोत्तमदेहि दास्यम् ॥२६॥

कर्ण ने कहा – न मैं और कुछ कहता हूं, न सुनता हूं, न और का चिंतवन करता हूं और मैं न किसी और का स्मरण करता हूं, न भजता हूं और न आश्रय लेता हूं हे श्री निवास हे पुरुषोत्तम केवल आपके कमल सरीखे

चरणों में आदर के साथ भक्ति रखता हूँ अतएव आप मुझे अपना दास बनाइये ॥२६॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ नमो नमः कारणवामनाय नारायणायामितविक्रमाय ॥ श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय॥२७॥

धृतराष्ट्र ने कहा – अमित विक्रम वाले, तथा कारण से वामन का स्वरूप धारण करने वाले नारायण को मेरा नमस्कार है और शार्ङ्ग, चक्र, असि (तलवार) और गदा को धारण करने वाले, पुरुषोत्तम को मेरा प्रणाम है ॥२७॥

गान्धार्युवाच ॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ॥ त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव च मेव सर्वं मम देव देव॥२८॥

गान्धारी ने कहा—हे देवों के देव ! तुमही मेरे माता और पिता हो, तुम्ही बन्धु और तुम्ही सखा हो, तुम्ही

विद्या और तुम्ही धन हो, और तुम्हीमेरे सब कुछ हो ॥२८॥

द्रुपद उवाच ॥ यज्ञेशाच्युत गो
विन्द माधवाऽनन्त केशव ॥ कृष्ण
विष्णो हृषीकेश वासुदेव नमोस्तु
ते ॥ २९ ॥

द्रुपद ने कहा—हे यज्ञेश, अच्युत, गोविन्द, माधव, अनन्त, केशव, कृष्ण, विष्णु, हृषीकेश और वासुदेव मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ २९ ॥

जयद्रथ उवाच ॥ नमः कृष्णाय
देवाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ योगे
श्वराय योगाय त्वामहं शरणं
गतः ॥ ३० ॥

जयद्रथ ने कहा—हे योगेश्वर, योग स्वरूप, अनन्त शक्ति, ब्रह्मरूप, देव श्रेष्ठ, कृष्ण ! आप को मेरा प्रणाम है। और मैं आप की शरण में आया हूँ ॥ ३० ॥

विकर्ण उवाच ॥ कृष्णाय वासुदे

वाय देवकीनंदनाय च ॥ नंदगोप कुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥३१॥

विकर्ण ने कहा—मैं कृष्ण, वासुदेव, देवकी नन्दन, नन्द कुमार, तथा गोविन्द को प्रणाम करता हूँ ॥३१॥

सोमदत्त उवाच ॥ नमः परम कल्याण नमस्ते विश्वभावन ॥ वासुदेवाय शान्ताय पशूनां पतये नमः ॥ ३२ ॥

सोमदत्त ने कहा — परम कल्याण स्वरूप, विश्वरक्षक, वासुदेव, शान्त स्वरूप, तथा पशुपतिको मेरा प्रणामहै ॥३२॥

विराट उवाच ॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ३३ ॥

विराट ने कहा—ब्रह्मण्यदेव और गो-ब्राह्मण के हित चिन्तक ईश्वर को मेरा प्रणाम है। जगत के हितकारी, कृष्ण, और गोविंद को मैं नमस्कार करता हूं ॥ ३३ ॥

शल्य उवाच ॥ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ॥ ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥ ३४ ॥

शल्य ने कहा—जो अलसी के पुष्प समान शरीर वाले विष्णु, पीताम्बर धारी तथा गोविंद का स्मरण करते हैं उनको कोई भय नहीं है ॥३४॥

बलभद्र उवाच ॥ कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव ॥ संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तमः ॥ ३५ ॥

बलभद्र ने कहा—हे कृष्ण ! हे कृपालु ! जिनकी गति नहीं उनकी गति आप हों और संसार सागर में डूबे

हुये मनुष्यों पर हे पुरुषोत्तम ! आप प्रसन्न हों ॥३५॥

श्रीकृष्ण उवाच ॥ कृष्ण कृष्णेति कृष्णेतियो मां स्मरति नित्यशः ॥ जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम् ॥ ३६ ॥

श्रीकृष्णजी ने कहा — जो कृष्ण कृष्ण और हे कृष्ण कह कर नित्य मेरा स्मरण करते हैं मैं उनको नरक से इस तरह निकाल लेता हूं जैसे जल को भेद कर कमल निकल आता है ॥ ३६ ॥

नित्यं वदामि मनुजाः स्वयमूर्ध्वबाहुर्यौमां मुकुंद नरसिंह जनार्दनेति ॥ जीवोजपत्यनुदिनं मरणे रणे वा पाषाणकाष्ठसदृशाय ददाम्यभीष्टम् ॥ ३७ ॥

(कृष्ण जी कहते हैं) हे मनुष्यो ! जो जीव मुकुंद

नरसिंह, अथवा जनार्दन कह कर मरण में या रण में प्रतिदिन मेरा स्मरण करता है मैं भुजा उठाकर (प्रणकरके) कहता हू कि वह चाहे काठ और पत्थर की समान क्यों न हो परंतु मैं उसको अभीष्ट देता हूं (उसकी मनो कामना पूरी करता हूँ) ॥ ३७ ॥

ईश्वर उवाच ॥ सकृन्नारायणेत्युक्त्वा पुमान् कल्पशतत्रयम् ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषु स्नातो भवति पुत्रक ॥ ३८ ॥

ईश्वर ने कहा — हे पुत्र ! नारायण शब्द का एक वार उच्चारण करने से गंगा इत्यादि सब तीर्थों में तीन सौ कल्प तक स्नान करने का फल होता है ॥ ३८ ॥

सूत उवाच ॥ तत्रैव गङ्गा यमुना च तत्र गोदावरी सिंधुसरस्वती च ॥ सर्वाणितीर्थानि वसन्ति तत्रयत्राच्युतोदारकथाप्रसङ्गः ॥३९॥

सूतजीने कहा—जहाँ अच्युत (विष्णु) की श्रेष्ठ कथा होती है उसी जगह गंगा और यमुना हैं, वहीं पर सिन्धु (सिन्ध नदी) और सरस्वती हैं और उसी स्थान में सब तीर्थं निवास करती हैं ॥ ३९ ॥

यम उवाच ॥ नरके पच्यमाने तु यमेन परिभाषितम् ॥ किं त्वया नार्चितोदेवःकेशवःक्लेशनाशनः॥४०॥

यमने कहा—नरक में पड़े हुये जीवों से यमराज ने पूछा—"क्या तूने दुःखको दूर करने वाले केशव की पूजा नहीं की ?" ॥ ४० ॥

नारद उवाच ॥ जन्मान्तरसहस्रेण तपोध्यानसमाधिना ॥ नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥ ४१ ॥

नारद ने कहा —हजारों जन्मों में किये हुये तप और ध्यान की समाधि से क्षीणपाप मनुष्यों के हृदय में कृष्ण चन्द्र की भक्ति पैदा होती है ॥ ४१ ॥

प्रह्लाद उवाच ॥ नाथ योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतास्तु सदा त्वयि ॥ ४२ ॥

प्रह्लाद ने कहा—हे नाथ ! हे अच्युत ! मैं जिन जिन हजारों योनियों में जाऊं उन उन योनियों में आप में मेरी अचल भक्ति रहे ॥ ४२ ॥

या प्रीतिरविवेकानां विषयेष्वनुधारिणी ॥ त्वदनुस्मरणादेव हृदयादपसर्पति ॥ ४३ ॥

हे देव ! अविवेकियों (मूर्खों) की जो प्रीति विषयों में होती है वह आपके स्मरण मात्र से हृदय से भाग जाती है ॥ ४३ ॥

विश्वामित्र उवाच ॥ किं तस्य दानैः किं तीर्थैः किं तपोभिः किम-

ध्वरैः ॥ योनित्यं ध्यायते देवं नारायणमनन्यधीः ॥ ४४ ॥

विश्वामित्रने कहा—जो मनुष्य अनन्य बुद्धि से नारायण भगवान का नित्य ध्यान करता है उसके लिये क्या दान, क्या तीर्थ, क्या तप और क्या यज्ञ (अर्थात् उसे इन सभों से कुछ प्रयोजन नहीं) ॥ ४४ ॥

जमदग्निरुवाच ॥ नित्योत्सवो भवेत्तेषां नित्यं नित्यंच मङ्गलम् ॥ येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलाय तनो हरिः ॥ ४५ ॥

जगदग्नि ने कहा—मंगल-भवन हरि जिसके हृदय में स्थित हैं उसके लिये सर्वदा उत्सव और नित्यही मंगलहै॥४५॥

भरद्वाज उवाच ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ४६ ॥

भरद्वाज ने कहा – जिनके हृदय में नीले कमल के समान शरीर वाले जनार्दन भगवान स्थित हैं उन्हींको लाभ होता है और उन्हीं की जय होती है और उनकी हार कहीं नहीं होती ।। ४६ ॥

गौतम उवाच ॥ गोकोटिदानं ग्रहणेषु काशी प्रयागगङ्गायुतकल्पवासः ॥ यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविन्दनामस्मरणेन तुल्यम् ॥४७॥

गौतम ने कहा — करोड़ों गौओं का दान, ग्रहण में काशी स्नान, दशहज़ार वर्ष तक प्रयाग-वास, तथा दश हज़ार यज्ञ और पर्वत की बराबर स्वर्णदान, यह सब मिल कर गोविन्द नाम के केवल एक बार उच्चारण करने के ही बराबर हैं ॥ ४७ ॥

अग्निरुवाच ॥ गोविन्देति सदा स्नानं गोविन्देति सदा जपः ॥ गोविन्देति सदा ध्यानं सदा गोविन्दकीर्त्तनम् ॥ ४८ ॥

अग्नि ने कहा — गोविन्द नाम स्मरण ही सदा स्नान है, गोविन्द ही सदा जप है, गोविन्द नामही सदा ध्यान है और वही सदा कीर्तन है ॥ ४८ ॥

त्र्यक्षरं परमं ब्रह्म गोविन्द त्र्यक्षरं परम् ॥ तस्मादुच्चरितं येन ब्रह्म भूयाय कल्पते ॥ ४९ ॥

'गोविन्द' नाम के तीनों अक्षर परम ब्रह्म स्वरूप हैं, जिसने इन तीन अक्षरों का उच्चारण किया वह ब्रह्मही में लय हो जायेगा ॥ ४६ ॥

श्रीबादरायणिरुवाच ॥ अच्युतः कल्पवृक्षोऽसावनन्तः कामधेनवः॥ चिन्तामणिस्तु गोविन्दो हरेर्नाम विचिन्तयेत् ॥ ५० ॥

श्री बादरायणि ने कहा—अच्युत नाम ही कल्प वृक्ष है और वही कामधेनु है। गोविंद नाम ही चिंता मणि है (अतएव) हरि नाम का ही चिंतवन करना चाहिये ॥५०॥

हरिरुवाच ॥ जयतु जयतु देवो देवकीनंदनोऽयं जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ॥ जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः॥५१॥

इंद्र बोले—देवकी पुत्र भगवान की जय हो जय हो, यदुवंश के प्रदीप (प्रकाशित करने वाले) कृष्ण जी की जय हो जय हो, बादल के समान श्याम अंगवाले, तथा कोमल शरीर वाले की जयहो जयहो, पृथ्वी के भार को नाश करने वाले मुकुन्द की जय हो, जय हो ॥ ५१ ॥

पिप्पलायन उवाच ॥ श्रीमन्नृसिंह विभवे गरुडध्वजाय तापत्रयोपशमनाय भवौषधाय ॥ कृष्णाय वृश्चिकजलाग्निभुजङ्गरोगक्लेशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते ॥५२॥

पिप्पलायन ने कहा—श्री नृसिंह, समर्थ, गरुड़ध्वज तथा तीनों तापों को (दैहिक, दैविक, भौतिक तापों को) दूर करने वाले, संसार की औषधि, तथा बिच्छू जल, अग्नि एवं सर्प रोग के दुखों को दूर करने वाले, जगतके गुरु कृष्ण जी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५२ ॥

हविर्होत्र उवाच ॥ कृष्ण त्वदीयप दपङ्कजपंजरान्ते अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः ॥ प्राणप्रयाणस मये कफवातपित्तैः कण्ठाऽवरोधन विधौ स्मरणं कुतस्ते ॥५३॥

हविर्होत्र ने कहा–हे कृष्ण ! अपने चरण कमलरूपी पिंजड़े में मेरे मन रूपी राज हंसको अभी प्रवेश करदो नहीं तो प्राण निकलते समय जब वात, पित्त, कफसे कण्ठावरोध हो जायगा तो आपका स्मरण कहाँ होगा ॥ ५३ ॥

विदुर उवाच ॥ हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम् ॥ कलौनास्त्यै

व नास्त्येव नास्त्येवगतिरन्यथा५४

विदुर ने कहा — निश्चय ही हरिनाम ही मेरा जीवन है और निस्संदेह कलियुग में अन्य कोई गति नहींहै ।.५४॥

वसिष्ठ उवाच ॥ कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्त्तते॥ भस्मीभ वन्ति तस्याशु महा ातककोटयः५५

वसिष्ठ ने कहा—'कृष्ण' यह मंगल नाम जिस की वाणी से निकलता है उसके करोड़ों महापातक तुरन्त ही नाश हो जाते हैं ॥ ५५ ॥

अरुन्धत्युवाच ॥ कृष्णाय वासुदे वाय हरये परमात्मने ॥ प्रणतक्लेश नाशाय गोविन्दाय नमोनमः ॥५६॥

अरुन्धती ने कहा—कृष्ण, वासुदेव, हरि, परमात्मा, तथा शरणागतों के दुःख दूर करने वाले गोविन्द को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५६ ॥

कश्यप उवाच ॥ कृष्णानुस्मरणा

देव पापसंघट्ट पञ्जरम् ॥ शतधा भे-
दमाप्नोति गिरिर्वज्रहतो यथा ॥५७॥

कश्यपने कहा—श्री कृष्णदेव के स्मरण से पापोंके समूह का पञ्जर इस प्रकार सैकड़ों टुकड़े हो जाता है जैसे वज्र से मारा हुआ पर्वत ॥ ५७ ॥

दुर्योधन उवाच ॥ जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानामि पापं न च मे निवृत्तिः । केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥५८॥

दुर्योधन ने कहा—मैं धर्म को तो जानता हूं परन्तु उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं, मैं पापों को भी जानता हूं परन्तु उसमें मेरी निवृति नहीं, मैं उनसे छुटकारा नहीं पा सकता। किसी हृदयमें बैठे हुये देवता की प्रेरणानुसार जैसा वह चाहता है वैसा ही मैं करता हूँ ॥ ५८ ॥

यन्त्रस्य मम दोषेण शम्यतां मधु

सूदन ॥ अहं यन्त्रं भवान् यन्त्री मम दोषो नदीयताम् ॥ ५९ ॥

हेमधूसूदन ! आप इस शरीर यंत्र के मेरे गुण दोषों को क्षमा करें (कारण यह कि) मैं तो यंत्र हूं औरआप इसके यंत्री (यंत्र चलाने वाले) हैं मेरा कुछ दोष नहीं (क्योंकि आपही की इच्छानुसार यह यंत्र चलता है)॥५६॥

भृगुरुवाच ॥ नामैव तव गोविन्द नामत्वत्तः शताऽधिकम् ॥ दद त्युच्चारणान्मुक्तिं भवानष्टाङ्गयो गतः ॥ ६० ॥

भृगुने कहा—हे गोविन्द ! आपका नाम ही आप से सौ गुना अधिक है (राम ते अधिक राम कर नामा) कारण कि आप तो अष्टांग योग से मुक्ति देते हैं परन्तु आप का नाम केवल स्मरण से ही मुक्ति देताहै ॥ ६० ॥

लोमश उवाच ॥ नमामि नारायण

पादपङ्कजं करोमि नारायणपूजनं सदा ॥ वदामि नारायणनाम निर्मलं स्मरामि नारायणतत्त्वमव्ययम् ॥ ६१ ॥

लोमशने कहा — मैं नारायण के चरण कमलों को प्रणाम करता हूं, नारायण का ही सदा पूजन करताहूं। निर्मल नारायण नाम ही कहता हूँ और नारायण रूपी अविनाशी तत्व का स्मरण करता हूं ॥ ६१ ॥

शौनक उवाच ॥ स्मृतेः सकलकल्याणंभाजनं यत्र जायते ॥ पुरुषस्तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥ ६२ ॥

शौनकने कहा—नित्य जिसका स्मरण करने से मनुष्य कल्याण भाजन हो जाता है मैं उस अज और अविनाशी हरि की शरण में जाता हूँ ॥ ६२ ॥

गर्गउवाच ॥ नारायणेति मन्त्रोऽस्ति वागस्ति वशवर्तिनी ॥ तथापि नरके घोरे पतन्तीत्यद्भुतं महत् ६३

गर्गजी ने कहा—नारायण ऐसे मन्त्र, तथा वशवर्तिनी (वश में रहने वाली) वाणी के होते हुये भी मनुष्य घोर नरक में पड़ते हैं यह बड़े आश्चर्य की बात है ॥ ६३ ॥

दाल्भ्य उवाच ॥ किं तस्य बहुभिर्मन्त्रैर्भक्तिर्यस्य जनार्दने ॥ नमो नारायणायेति मन्त्रः सर्वार्थसाधकः ॥ ६४ ॥

दाल्भ्यने कहा—जनार्दन में जिसकी भक्ति है उसे बहुत मन्त्रों से क्या काम ? "ॐ नमो नारायणाय" मन्त्र ही सब कार्यों को पूरा करने वाला है ॥ ६४ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ यत्र योगेश्वरः

कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्द्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूति ध्रुंवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ६५ ॥

वैशम्पायनने कहा—जहां योगेश्वर कृष्ण तथा धनुर्धर अर्जुन हैं वहीं पर लक्ष्मी, विजय, ऐश्वर्य और नीति रहती हैं यह मेरी मति में निश्चय है ॥६५॥

अग्निरुवाच ॥ हरिर्हराति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः ॥ अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः ६६

अग्नि ने कहा—दुष्ट चित्त से भी स्मरण करने से हरि सब पापों को हर लेते हैं जैसे इच्छा न होते हुये भी आग छू जाने से जला ही देती है ॥ ६६ ॥

परमेश्वर उवाच ॥ सकृदुच्चारितं येन हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥ बद्धः

परिकरस्तेन मोक्षाय गमनंप्रति।६७।

परमेश्वर ने कहा—एक वार भी जिसने 'हरि' इन दो अक्षरों का उच्चारण किया उसने (मानों) मोक्ष को जाने के लिये कमर बाँधी ॥ ६७ ॥

पुलस्त्य उवाच ॥ हेजिंव्हे रससा रज्ञे सर्वदा मधुराप्रिये ॥ नारायणा ख्यपीयूषं पिब जिंव्हे निरन्तरम् ६८

पुलस्त्यने कहा—हे रस के सार को जानने वाली तथा मीठी वस्तुओं को चाहने वाली जीभ ! तू निरन्तर (सर्वदा) नारायण नामामृत को पिया कर ॥ ६८ ॥

व्यासउवाच ॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ नास्ति वेदात्परं शास्त्रं न देवः केशवात्परः ॥ ६९ ॥

व्यासदेव ने कहा–मैं सत्य सत्य तथा फिर भी सत्य ही सत्य कहता हूँ कि वेदों के अतिरिक्त और कोई शास्त्र नहीं और केशव भगवान के सिवाय दूसरा देवता नहीं है ॥६६॥

धन्वन्तरिरुवाच ॥ अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजात् ॥ नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ७० ॥

धन्वन्तरिने कहा–मैं सत्य ही सत्य कहता हूँ कि अच्युत अनन्त और गोविन्द नाम का उच्चारण करना ही औषधि है इसीसे सब रोग नाश हो जाते हैं ॥ ७० ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ स्वर्गदं मोक्षदं देवं सुखदं जगतो गुरुम् ॥ कथं मुहूर्त्तमपितं वासुदेवन्न चिन्तयेत् ॥७१॥

मार्कण्डेय ने कहा–स्वर्ग, मोक्ष और सुख के देनेवाले,

जगत् के गुरु वासुदेवका तू क्षण मात्र भी क्यों नहीं चिन्तवन करता ? ॥ ७१ ॥

अगस्त्य उवाच ॥ निमिषं निमिषार्धंवा प्राणिनां विष्णुचिन्तनम् ॥ तत्र तत्र कुरुक्षेत्रं प्रयागो नैमिषं वनम् ॥ ७२ ॥

अगस्त्य ने कहा—एक पल अथवा आधे पल विष्णु का चिन्तवन करना ही मनुष्यों के लिये कुरुक्षेत्र, प्रयाग और नैमिषारण्य तीर्थ है ॥ ७२ ॥

वामदेव उवाच ॥ निमिषं निमिषार्द्धंवा प्राणिनां विष्णुचिन्तनम् ॥ कल्पकोटिसहस्राणि लभते वांछितं फलम् ॥ ७३ ॥

वामदेवजी बोले—एक पल वा आधे पल जो विष्णु

का ध्यान है उससे करोड़ कल्पवास का वांछित फल मिलता है ॥ ७३ ॥

शुक उवाच ॥ आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः ॥ इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयोनारायणः सदा ॥ ७४ ॥

शुकजी ने कहा—सब शास्त्रों को मथकर और बार म्बार विचार कर मैंने यही सिद्धान्त स्थिर किया है कि नारायण का ध्यान सदा ही करने योग्य है ॥ ७४ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ शरीरे जर्ज्जरीभूते व्याधिग्रस्ते कलेवरे ॥ औषधं जाह्नवीतोयंवैद्योनारायणो हरिः ॥७५॥

महादेवजी ने कहा—इस जीर्ण शरीर तथा रोगग्रस्त

देह के लिये गंगाजल ही औषधि है और हरि नारायण ही वैद्य हैं ॥ ७५ ॥

शौनक उवाच ॥ भोजनाच्छादने चिन्तां वृथा कुर्वन्ति वैष्णवाः ॥ योऽसौ विश्वम्भरो देवः स किं भक्तानुपेक्षते ॥ ७६ ॥

शौनक ने कहा--वैष्णव लोग व्यर्थ ही भोजन और कपड़े की चिन्ता करते हैं कारण कि वह विश्व का पोषण करने वाला भगवान क्या कभी भक्तों की उपेक्षा करेगा ? (वह तो स्वयं वस्त्र भोजन देगा) ॥७६॥

सनत्कुमार उवाच ॥ यस्य हस्ते गदा चक्रं गरुडो यस्य वाहनम् ॥ शंखचक्रगदापद्मी स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥ ७७ ॥

सनत्कुमार ने कहा—जिसके हाथमें गदा और चक्र है। गरुड़ जिनका वाहन है ऐसे शंख चक्रगदा पद्मधारी विष्णु मेरे ऊपर प्रसन्न हों ।। ७७ ।।

एवं ब्रह्मादयो देवा ऋषयश्च तपो धनाः ॥ कीर्तयन्ति सुरश्रेष्ठमेवं नारायणं विभुम् ॥ ७८ ॥

इस प्रकार ब्रह्मा इत्यादि देवता तथा तपोधन (तप ही जिनका धन है) ऋषि लोग सब देवताओं में श्रेष्ठ विभु नारायण का कीर्तन करते हैं ।। ७८ ।।

इदं पवित्रमायुष्यं पुण्यं पापप्रणाशनम् ॥ दुःस्वप्ननाशनं स्तोत्रं पाण्डवैः परिकीर्तितम् ॥ ७९ ॥

यह पवित्र और आयु तथा पुण्य को देने वाला, और पाप तथा दुःख का नाश करने वाला स्तोत्र (पांडव गीता) पाण्डवों का कहा हुआ है ।। ७९ ।।

यः पठेत् प्रातरुत्थाय शुचिस्तद्गत मानसः ॥ गवां शतसहस्रस्य सम्य ग्दत्तस्य यत्फलम् ॥८०॥ तत् फलं समवाप्नोति यः पठेदिति संस्त· वम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णु· लोकं स गच्छति ॥ ८१ ॥

सवेरे उठकर शुद्ध होकर तथा चित्त लगा कर जो इसका पाठ करता है वह सौ हज़ार (एक लाख) भली भाँति दी हुई गौओं के दान का जितना फल होता है ॥ ८० ॥ उतना फल पाता है और जो इसका पाठ करता है वह सब पापों से छूट कर विष्णु लोक को जाता है ॥ ८१ ॥

गरुडध्वजः ॥ चतुर्गकारसंयुक्तः पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ८२ ॥

जो 'गंगा गीता, गायत्री, और गोविन्द गरुड़ध्वज' इन चार गकारों का उच्चारण करता है उसका जन्म फ़िर इस संसार में नहीं होता है ॥ ८२ ॥

गीतां यः पठते नित्यं श्लोकार्द्धं श्लोकमेव वा ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं सगच्छति ॥८३॥

जो मनुष्य इस समस्त गीता को या इसके एक श्लोक को या केवल आधे श्लोक को पढ़ता है वह सब पापों से छूट कर विष्णु लोक को जाता है ॥ ८३ ॥

इति प्रतापगढ़ प्रान्तान्तर्गत श्रीनाथपुर ग्राम निवासी सर्वजीत सिंहात्मज अमरपालसिंह, विशारद कृत भाषा टीका समाप्ता ॥

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा, भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित ।

लिए काम

नयी दिल्ली, २ जुलाई। देश भर में गांवों में बच्चों के हित के लिए तेजी से काम किया जाएगा। इसके लिए सामुदायिक विकास खंडों की १३,००० बालवाड़ियों का उपयोग किया जाएगा। सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मन्त्रालय की महिला सलाहकार को सलाह दी है कि बालवाड़ियों में केवल आरम्भिक शिक्षा का काम ही नहीं होना चाहिए, बल्कि बच्चों के हित के काम भी होने चाहिए। इन सभी १३,००० बालवाड़ियों को राज्यों के शिक्षा विभागों से मान्य कराने का प्रस्ताव है, ताकि इनकी भली प्रकार देख रेख हो सके।

रत्न डा० विधानचन्द्र रायके आकस्मिक निधनसे दुःखी होकर देशके अनेक सम्मानित नेताओंने अपने संवेदना संदेश भेजे हैं जो इस प्रकार हैं।

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णनने जो कलकत्तेमें ही हैं दुखी होकर कहा—'मुझे बड़ा दुःख है जो आज हमारे बीचसे देशका एक नेता एवं बंगालका युग पुरुष उठ गया। पिछले ४० वर्षोंसे मैं श्री रायको जानता हूं। इनके निधनसे मेरी निजी क्षति भी हुई है।'

उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेन ने कहा – देशका महान सेवक आज हमारे बीचसे चला गया।

प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने अपने संवेदना संदेशमें कहा है—'डा० राय हमारे बीच एक कर्मठ देश सेवकके समान रहे और अपनी कर्तव्य परायणतासे उन्होंने काफी सफलता पायी तथा अन्त तक बड़े उत्साहसे देश सेवामें जुटे रहे।'

भारतके भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादने पश्चिमी बंगालके राज्यपालको तार द्वारा शोक प्रकट करते हुए कहा है—हमें दुःख इस बातसे अधिक है जो डा० राय अचानक ही चल बसे।

उपर्युक्त नेताओंके अतिरिक्त रक्षा मंत्री श्री मेनन, वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई, काश्मीरके प्रधान मंत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद तथा देश एवं प्रदेशोंके अनेक मंत्रियों एवं मुख्य मंत्रियोंने अपने शोक संदेश भेजे हैं।

———

लखनऊ, २ जुलाई। विश्वस्त रूपसे ज्ञात हुआ है कि लखनऊ विश्वविद्यालयसे सम्बद्ध डिग्री कालेजों को नौकर पेशा व्यक्तियोंके अध्ययन के लिए अतिरिक्त कक्षाओंको भविष्य में जारी रखनेकी स्वीकृति मिल गयी है। लेकिन अब दो वर्षकी जगह तीन वर्षका डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ना होगा। आशा है कि इस सम्बंधमें वाइसचांसलर द्वारा सम्बन्ध डिग्री कालेजोंको आवश्यक आदेश किये जायेंगे।

ज्ञात हुआ है कि राज्यके अन्य विश्वविद्यालयोंमें भी नौकरी पेशा व्यक्तियोंको अध्ययनके लिए तीन वर्षीय डिग्री कोर्स शुरू करनेकी सुविधा प्रदान की जायगी।

राज्य सरकारके राज्यके विश्वविद्यालयोंमें 'पत्र व्यवहार' द्वारा चार वर्षीय स्नातकोत्तर कक्षाओंको शुरू करनेके बारेमें भी विचार कर रही है।

तीन वर्षीय डिग्री कोर्स पाठ्यक्रम कालेजों तथा विश्वविद्यालयोंमें सिर्फ नौकर पेशा व्यक्तियोंके लिए खुलेंगे इसमें अन्य लोग नहीं पढ सकेंगे।

इस नयी योजनाके अन्तर्गत प्रातः कालीन कक्षाये समाप्त हो जायेंगी और सिर्फ सांध्य कक्षाएं ही चालू की जायेंगी।

इस नयी योजनासे विश्वविद्यालयपर कोई बड़ा खर्च नहीं पडने वाला है। विश्वविद्यालय सम्बन्ध कालेजोंसे फीस बढाकर अध्यापकोंपर होनेवाले खर्चेको पूरा करेंगे।

भूतपूर्व कांग्रेस अध्यक्ष भारत रत्न श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन तथापश्चिमी बंगालके मुख्यमन्त्री श्रीविधानचन्द्र रायके निधनपर सम्मानके रूपमें राज्य की सभी सरकारी इमारतोंपर लगे सरकारी झण्डे आज और कल आधे झुका दिये जायेंगे। कल (२जुलाई को) खजानोंको छोड़कर राज्यके समस्त कार्यालय बन्द रहेंगे मंगलवारको कौंसिल भवनमें एक शोक सभा होगी।

दिल्ली में बाग और बगीचे

काबिज के हाथ बेचे जा सकेंगे

नयी दिल्ली २ जुलाई केन्द्रीय निर्माण, आवास और पूर्ति मंत्रालय के पुनर्स्थापन विभाग की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि दिल्ली